डॉ. पद्माकर रामचन्द्र दुभाषी
Dr. Padmakar Ramchandra Dubhashi

पद्म भूषण
Padma Bhushan

राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए
Receiving the decoration from the President

डॉ. पद्माकर रामचन्द्र दुभाषी

द्माकर रामचन्द्र दुभाषी, एक सेवानिवृत्त सिविल सेवक हैं और इस समय आप भारतीय विद्या भवन पुणे–केन्द्र के अध्यक्ष हैं ।

का जन्म 07 मार्च, 1930 को हुआ । आपने पुणे विश्वविद्यालय से एम.ए. और "भारत में स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद नीति और कार्य–निष्पादन–कृषि और ग्रामीण "पॉलिसी एण्ड पर्फोमेंस–एग्रीकल्चरल रूरल्स डिवेलपमेंट इन पोस्ट इंडिपेंडेंट इंडिया") विषयक शोध पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की । आपने "ग्रामर ऑव हेत" अपनी पुस्तकों और लेखन कार्य के संबंध में बम्बई विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि प्राप्त की । आपने लंदन स्कूल ऑव इकॉनॉमिक्स से अर्थशास्त्र और प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया, जहां आपने ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलर के रूप में अध्ययन किया।

ीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में आपने अपने पैंतीस वर्षीय सेवाकाल में विभिन्न पदों पर कार्य किया । आप कई सहकारी संस्थाओं के अध्यक्ष भी रहे । 5 भारती सहकारी संस्थाओं के अध्यक्ष भी रहे । आप कृषक भारती सरकारी समिति के पहले अध्यक्ष भी रहे । उप सचिव और निदेशक के रूप में कार्य करते हुए, भेन्न राज्यों में सामुदायिक विकास और सहकारी प्रशिक्षण–संस्थाओं की स्थिति को सुधार कर उन्हें सुदृढ़ किया। आप राष्ट्रीय सामुदायिक विकास–संस्थान, मसूरी 5 (अध्ययन) रहे । पुणे में भारतीय रिज़र्व बैंक के कृषि–बैंकिंग–महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य के रूप में आपने वाणिज्यिक बैंकरों के कृषि–वित्त से संबंधित प्रशिक्षण म तैयार किए । बड़े वाणिज्यिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद, आपने वाणिज्यिक बैंकों के लिए कृषि–वित्त से संबंधित नई ज़िम्मेदारी आरंभ करने में अग्रणी भूमिका आपने पुणे में वैकुंठ मेहता के नाम से राष्ट्रीय सहकारी–प्रबंधन संस्थान स्थापित करने का भी बीड़ा उठाया।

ाटक में मालप्रभा और घाटप्रभा परियोजनाओं के प्रशासक के रूप में आपने विशाल सिंचाई–परियोजनाओं के अन्तर्गत सिंचाई–क्षमता का उपयोग करने के लिए नियंत्रक (कमांड) क्षेत्र–विकास से संबंधित बहु वर्गीय कार्यक्रम तैयार किया । बाद में यह कार्यक्रम देश में नियंत्रण–क्षेत्र–विकास के लिए एक मॉडल बन गया । ज्य में पंचायती राज–संस्थाओं के कार्यसंचालन के लिए नियम और मार्गदर्शी सिद्धान्त बनाए । स्वर्गीय श्री एल.एम.सिंघवी की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ–दल के ; रूप में आपने पंचायती राज–संस्थाओं के लिए संवैधानिक आधार उपलब्ध करवाने के लिए मसौदा तैयार किया, जो बाद में संविधान के 93वें संशोधन का आधार ज़िला–योजना समिति के सदस्य के रूप में कार्य करते हुए, आपने विकेन्द्रीकृत योजना–प्रक्रिया में योगदान किया । आप योजना–आयोग के –मूल्यांकन–संगठन– समिति के भी अध्यक्ष रहे ।

ने कर्नाटक में सिंचाई–परियोजना और हाजिरा उर्वरक–परियोजना के लिए ऋण मंजूर करवाने के लिए विश्व–बैंक में देश का प्रतिनिधित्व किया । गृह–मंत्रालय ग–अधिकारी के रूप में आपने न केवल मंत्रिमंडल की नियुक्ति–समिति के सचिव के रूप में काम किया, बल्कि कार्मिक–प्रबंधन के मार्गदर्शी सिद्धान्त उपलब्ध के लिए स्थापना मैन्युअल भी तैयार किया । आपने मंत्रिमंडल–सचिवालय में सचिव (समन्वय) के रूप में भी काम किया। आपने 05 वर्ष तक भारतीय शासन–संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक के रूप में कार्य किया । आप इंटरनेशनल ऐसोसिएशन ऑव स्कूल्स और इंस्टीट्यूशन्स ऑव पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के भी रहे ।

प ग्रामीण और सामुदायिक विकास–सहयोग पंचायतीराज, योजना, ग़रीबी–उपशमन और लोक–सेवकों के प्रशिक्षण जैसे कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर सम्मेलनों में हिस्सा ले चुके हैं । आपने भारत–सरकार और राज्य–सरकार के कई सम्मेलन आयोजित किए । आपने लोक–प्रशासन से संबंधित विभिन्न विषयों पर दिए हैं, जिनमें डॉ. जाकिर हुसैन मेमोरियल लेक्चर और डॉ. जॉन मेमोरियल लेक्चर शामिल हैं । आपको लोक प्रशासन और अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर पुस्तकें और अनेक लेख तथा परचे लिखने का श्रेय प्राप्त है, जिन्हें प्रमुख राष्ट्रीय समाचार–पत्रों और पत्रों (जरनलों) में प्रकाशित किया जा चुका है ।

पने नाबार्ड द्वारा गठित ग्रामीण वित्त–विषयक विशेषज्ञ–समिति के सदस्य और पुणे विश्वविद्यालय द्वारा गठित प्रबंधन–विषयक समिति के अध्यक्ष जैसे विभिन्न रूपों र्य किया है । आपने गोवा विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भी काम किया है । आप आई एफ ए डी और एशियाई विकास–बैंक के सलाहकार भी रहे और आपने बर्मा (अब म्यांमार), श्रीलंका, फिलिपिन्स, मलेशिया और टोंगा सहित अनेकों देशों के बारे में रिपोर्टें दीं ।

पको वर्ष, 1993 में शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

Dr. Padmakar Ramchandra Dubhashi

r. Padmakar Ramchandra Dhubhashi, a retired civil servant, is presently Chairman of Bharatiya Vidya Bhavan, Pune Kendra.

orn on March 7, 1930, Dr. Dhubhashi obtained M.A. and Ph.D. from Pune University for his thesis "Policy and Performance – Agricultural & Rural opment in Post Independent India". He received D.Litt. from Bombay University for his books and writings including "Grammer of Planning". He also obtained raduate Diploma in Economics and Social Administration from the London School of Economics, where he studied as a British Council scholar.

s an Indian Administrative Service officer, Dr. Dubhashi in his thirty five years of service, worked in various capacities. He also headed various co-operative ions. He was the first Chairman of Krushak Bharati Co-operative (KRIBCO). As Deputy Secretary and Director, he placed community development and co-ive training institutions on a sound footing in various states. He was Director (Studies) at the National Institute of Community Development Mussuri. As the rincipal of College of Agricultural Banking of RBI at Pune, he formulated programmes of training in Agriculture finance for commercial bankers. After alization of large commercial banks, he played a pioneering role in introduction of new responsibility of Agriculture Finance for the commercial bankers. He so responsible for setting up the National Institute of Co-operative Management named after Vaikuntha Mehta in Pune.

As Administrator of Malaprabha and Ghatprabha projects in Karnataka, Dr. Dubhashi formulated a multi sectional programme of integrated command area opment for utilization of irrigation potential under the large irrigation projects. This later became model for command area development (CADA) in the country. rmulated rules and guidelines for functioning of Panchayati Raj institutions in the state. As member of the expert group appointed under the chairmanship of ite L.M. Singhavi, he formulated the draft for providing the constitutional base for Panchayati Raj institutions, which later became the basis of 93rd amendment Constitution. Dr. Dubhashi contributed to the decentralized planning process by serving as member of the committee on district planning. He also headed the nittee on Programmes Evaluation Organisation of the Planning Commission.

Dr. Dubhashi represented the country at the World Bank for sanction of loans for irrigation project in Karnataka and fertilizer project of Hajira. As Establishment er in the Union Home Ministry, he not only served as Secretary of the Appointments Committee of the Cabinet but also prepared an Establishment Manual to de guidelines for personnel management. He also served as Secretary (Coordination) in the Cabinet Secretariat. He served as Director, IIPA New Delhi for five . He was Vice President of the International Association of Schools and institutions of Public Administration.

Dr. Dubhashi has participated in a large number of conferences at national and international level in several areas – Rural and Community Development, Co-ation, Panchayati Raj, Planning, Poverty alleviation and training of public servants. He organized many conferences for Government of India and the State ernment. He also delivered lectures on various subjects relating to Public Administration including Dr. Zakir Hussain Memorial Lecture and Dr. John Memorial ure. Dr. Dubhashi has to his credit twenty five books and numerous articles and papers relating to various facets of public administrations and Economics which been published in leading national news papers and journals.

Dr. Dubhashi has also served in various capacities, like member of the Expert Committee on Rural Finance appointed by NABARD and as Chairman of the mittee on Management Institutes appointed by the Pune University. He has also served as Vice Chancellor of Goa University. He was consultant to IFAD and n Development Bank and gave reports on many countries including Nepal, Burma (now Myanmar), Sri Lanka, Philippines, Malaysia and Tonga.

Dr. Dubhashi received Shiromani Award in 1993.